HISTORY

1

• महाभारत (Mahabharat)

महाभारत, विश्व का सबसे लंबा काव्य है। इसमें 18 पर्व है और सभी पर्वों को मिलाकर कुल 1948 अध्याय है। कहा जाता है कि इसमें एक लाख से भी अधिक श्लोक है। यह भारत की सबसे बहुमूल्य धरोहर है। यह आत्मा को बल प्रदान करती है। यह किसी अन्य ग्रंथ की अपेक्षा, मनुष्य के हृदय से घृणा, क्रोध, अहंकार तथा अति आकांक्षाओं को निकालता है। महाभारत, केवल एक काव्य ही नहीं बल्कि यह एक वीरता की गाथा तथा वीर और विरांगनाओं के उच्च कार्यों की कहानी है और इसमें कुछ देवी और देवताओं की गाथाएं भी है। यह एक आदर्श जीवन व्यतीत करने के नियमों का संग्रह है। यह मनुष्य की मानसिक समस्याओं का समाधान करने का भंडार है जिसका और कहीं पर उदाहरण नहीं मिलता।

श्री भगवदगीता, महाभारत का सबसे शिक्षाप्रद और रोचक भाग है। गीता निष्काम कर्म करने के सिद्धांत की शिक्षा देती है। गीता के उपदेशों के अनुसार, मनुष्य को बिना किसी फल की इच्छा किये निस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य करने चाहिए। इस सिद्धांत का हिंदुओं के विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। महाभारत सदा हि मानवता के लिये आत्मिक प्रेरणा का स्त्रोत रहा।

2

साधनों की प्राप्ति के बारे में सामाजिक अनुमान (Social Implications of access to Resources) लिंग के आधार पर संपत्ति विभाजन

महाभारत में हम देखते हैं कि पांडव पति अपनी सारी सम्पत्ति कौरवों के साथ चौसर के खेल में हार गये। अंत में पांडवों ने अपनी साझी पत्नी द्रौपदी को दाँव में लगा दिया तथा उसे भी खो बैठे। इस प्रकार धर्म शास्त्रों तथा धर्म सूत्रों में भी सम्पत्ति के बारे में ऐसे कई दृष्टांत मिलते हैं। मनुस्मृति के अनुसार, माता-पिता की सम्पत्ति पर उनकी मृत्यु के पश्चात उनके पुत्रों का समान अधिकार होता था। जिसमें सबसे बड़े पुत्र को कुछ अधिक भाग मिलता था। स्त्रियों को इन साधनों पर कोई भी अधिकार नहीं था अभिलेख तथा धार्मिक पुस्तकों से पता चलता है की उच्च वर्ग की स्त्रियों का अधिसाधनों भूमि, पशुओं और धन पर कोई अधिकार नहीं था। लेकिन हमें ऐसे उदहारण भी मिलते हैं कि कई स्त्रियाँ बहुत धनवान थी जैसे की ~~वाकाटक~~ वाकाटक वंश की रानी प्रभावति गुप्त थी।